Topic: समाजीकरण के कारक या निर्धारक

(Factors or determinants of socialization)

Scanned with CamScanner

समाजीकरण के कारक या निर्धारक (Factors or determinants of socialization)

जन्म के समय बच्चा न तो सामाजिक होता है और न असामाजिक होता है। एक छोटा बच्चा शारीरिक तथा मानसिक योग्यताओ के अविकसित होने के कारण सामाजिक माँगों को नहीं समझ पाता है। वह नहीं समझ पाता है कि समाज के प्रति उसके कर्तव्य क्या है, उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। लेकिन, उम्र बढ़ने के साथ-साथ उसे इन सारी बातों की चेतना होने लगती है। अब वह अपने समाज या समूह के मूल्यों, मानदण्डों और विश्वासों के अनुकूल व्यवहार करना सीख लेता है। वह सामाजिक बन जाता है। यदि वह सामाजिक नियमों, मूल्यों या मानदण्डों का उल्लंघन करत्त है ते उसे असामाजिक कहते हैं। प्रश्न यह है कि सामाजिक नियमों, मूल्यों तथा मानदण्डों के समान होने पर भी एक बच्चा सामाजिक और दूसरा बच्चा असामाजिक क्यों बन जाता है? विभिन्न समाजों के व्यक्तियों के समाजीकरण में भिन्नताएँ क्यों होती हैं? एक ही समाज या समूह के सदस्यों के समाजीकरण में भिन्नता का क्या कारण है? इन सारी समस्याओं के समाधान के लिए यह देखना आवश्यक है कि समाजीकरण की प्रक्रिया पर किन-किन कारकों का प्रभाव पड़ता है।

समाजीकरण के कारक या निर्धारक:

1. **परिवार (Family)-** समाजीकरण के निर्धारकों में परिवार एक महत्त्वपूर्ण निर्धारक है। विशेष रूप से प्राथमिक समाजीकरण (primary socialization) अर्थात् बच्चों के समाजीकरण में परिवार का हाथ सबसे अधिक होता है। बच्चों का अधिक समय परिवार में गुजरता है। इसलिए किसी चीज का प्रभाव उन पर जल्दी तथा गहरा पड़ता है। पारिवारिक वातावरण में ही आत्म (self) का विकास होता है तथा मौलिक तादात्म्यों (identities), प्रेरणाओं, मूल्यों (values) तथा विश्वासों का निर्माण होता है। परिवार में समाजीकरण के कई mechanisms जैसे—प्रतिरूपण (modeling), प्रबलन (reinforcement), भूमिका-निर्वाह (role- playing), लेबल लगाना (labeling), सामाजिक तुलना (social comparison) आदि सक्रिय होते हैं। परन्तु परिवार की संरचनात्मक विशेषताओं तथा विमाओं में भिन्नता होने के कारण बच्चों के समाजीकरण में अन्तर्समुह भिन्नताएँ (intersocietal variations) भी उत्पन्न हो जाती है। इस संबंध में निम्नलिखित बातें महत्त्वपूर्ण हैं :-
    - **आत्मीकरण तथा यौन-भूमिका (Identification and sex role)**—परिवार में बच्चों की आयु (age) तथा यौन-भूमिका (gender role) का प्रभाव उनके समाजीकरण पर पड़ता है। एक विशेष आयु होने पर बच्चे अपने-आप को लड़का या लड़की के रूप में देखने लगते हैं, और अपनी यौन-भूमिका के अनुकूल मूल्यों, मापदंडों तथा विश्वासों को सीखने लगते हैं। लड़कियाँ अपनी माताओं के साथ आत्मीकरण स्थापित कर लेती हैं और अपनी संस्कृति द्वारा निर्धारित स्त्री -भूमिका (feminine role) को अदा करने लगती हैं। दूसरी ओर लड़के अपने पिता के साथ आत्मीकरण स्थापित करके अपनी संस्कृति द्वारा परिभाषित पुरुष-

Scanned with CamScanner

भूमिका (masculine role) को निभाने लगते हैं। परन्तु पिता परिवार से प्रायः बाहर रहता है। इसलिए लड़कों के लिए यौन-भूमिका को सीखना कठिन होता है। उन्हें पुरुष-भूमिका के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त करने के लिए अन्य कई स्रोतों पर निर्भर करना पड़ता है। इस यौन-भूमिका के शिक्षण का प्रभाव लड़के तथा लड़कियों के संज्ञानात्मक कार्य पर पड़ता है।

- **माता-पिता के व्यवहार (Parental behaviour)-** भूमिकाएँ, मानदण्ड तथा विश्वास समाजीकरण के घटक हैं, जो माता-पिता प्रत्यक्ष निर्देशन द्वारा अपने बच्चों तक पहुँचाते हैं। इसके अलावा बच्चे अनुकरण (imitation) तथा प्रतिरूपण (modeling) के आधार पर भी विभिन्न घटकों को सीख लेते हैं। समाजीकरंण के दृष्टिकोण से माता-पिता से सम्बन्धित दो बातें मुख्य हैं- **i)** माता-पिता द्वारा बच्चों पर नियंत्रण के गुण तथा मात्रा, और **ii)** माता-पिता से बच्चों को मिलने वाले स्नेह तथा सहयोग (support) की मात्रा। बच्चों के समाजीकरण पर इन दोनों बातों का गहरा प्रभाव पड़ता है (Rollins & Thomas, 1974)।
- **परिवार का आकार (Family Size)-** परिवार के आकार का प्रभाव बच्चों के समाजीकरण पर पड़ता है। अध्ययनों से पता चलता है कि अन्य बातें समान होने पर बड़े परिवार की अपेक्षा छोटे परिवारों के बच्चों की बुद्धि अधिक विकसित होती है। बड़े परिवारों की अपेक्षा छोटे परिवारों के बच्चों मे उच्च उपलब्धि-प्रेरक अधिक पाये जाते हैं। (Rosen, 1961)। इसका प्रधान कारण यह है कि छोटे परिवार माता-पिता तथा बच्चे के साथ पारस्परिक प्रतिक्रिया अधिक होती है और वातावरण अधिक उत्तेजक बन जाता है (Zajone, 1976)।
- **जन्म-क्रम (Birth order)-** इस चर के प्रभाव के सम्बन्ध में विरोधी परिणाम मिलते हैं। इसी कारण शूलर (1972) ने कहा है कि एक स्वतंत्र चर के रूप में जन्म-क्रम की गणना नहीं की जानी चाहिए। लेकिन, जाजोन (1979) के अनुसार इस चर का प्रभाव समाजीकरण पर किस रूप में पड़ेगा, यह बात परिवार के आकार तथा भाई-बहनों के स्वभाव पर निर्भर करती है। उनके अध्ययन में देखा गया कि 4-5 वर्षों तक प्रथम जन्म क्रम वाले बच्चों ने बाद वाले बच्चों की अपेक्षा बुद्धि-परीक्षण पर अधिक अंक पाया, 12-13 वर्ष की आयु तक कम अंक पाया और इसके बाद फिर अधिक अंक प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि यदि बच्चों की आयु को ध्यान में रखा जाए तो बौद्धिक-विकास पर जन्म-क्रम का निश्चित प्रभाव देखा जा सकता है। लेकिन, अन्य अध्ययनों से उनके विचार का समर्थन नहीं हुआ (Olneck & Bills, 1979) और बौद्धिक विकास पर जन्म-क्रम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं देखा गया।
- **माता-पिता के बीच सम्बन्ध (Relationship between parents)-** माता-पिता के बीच संतोषजनक सम्बन्ध होने पर बच्चों का समाजीकरण कुशल होता है, जबकि दोषपूर्ण

Scanned with CamScanner

सम्बन्ध के कारण बच्चों का समाजीकरण दोषपूर्ण बन जाता है। टरमन के अनुसार जो माता-पिता संतुलित वैवाहिक जीवन गुजारते हैं, उनके बच्चों में सामाजिक गुण विकसित होते हैं। जिन माता-पिता का वैवाहिक जीवन असंतुलित तथा संषर्घपूर्ण होता है उनके बच्चों में असामाजिक शीलगुण विकसित हो जाते हैं | विघ्न परिवार (broken homes, जैसे- पिता ने माता को या माता ने पिता को तलाक दे दिया हो, माता या पिता या दोनों की मृत्यु हो गयी हो, माता तथा पिता के बीच हमेशा झगड़ा होता हो, इत्यादि) पर किये गये अध्ययनों से बच्चों के समाजीकरण मे माता-पिता के बीच संतोषजनक सम्बन्ध का महत्त्व स्पष्ट होता है। पिता के अभाव में माता तथा बच्चे अथवा माता के अभाव में पिता तथा बच्चे के बीच अनुकूल पारस्परिक क्रिया संभव नहीं हो पाती है।माता तथा पिता के व्यवहार बच्चों के प्रति संगत तथा स्थिर नहीं हो पाते हैं, वे बच्चे को अपेक्षित स्नेह नहीं दे पाते हैं तथा उचित निगरानी नहीं कर पाते हैं। ऐसे माता-पिता के बच्चे ज्ञानात्मक (cognitive) तथा संवेगनात्मक समस्याओं से पीड़ित हो जाते हैं (Hetherington, 1976, 1978)।

- **आर्थिक स्थिति (Economic condition)-** परिवार की आर्थिक स्थिति का प्रभाव समाजीकरण पर कई रूपों में पड़ता है। बच्चों के खान-पान तथा रहन-सहन का स्तर, पड़ोस का स्तर तथा खेल-कूद का स्तर, परिवार की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है। इन सब का प्रभाव उनके समाजीकरण पर पड़ता है। धनी परिवार के बच्चों को माता- पिता के साथ रहने तथा बातचीत करने का अवसर अधिक मिलता है। इसलिए उनका समाजीकरण सफल हो पाता है। गरीब परिवार के बच्चों को इसका अवसर नहीं मिलता है। धनी परिवार के बच्चों को उचित शिक्षा पाने तथा अच्छे खेल-कूद में भाग लेने का अवसर मिलता है जबकि गरीब परिवार के बच्चों को यह अवसर नहीं मिलता है। परिणामत: धनी परिवार के बच्चों का समाजीकरण गरीब परिवार के बच्चे से अधिक कुशल होता है। लेकिन, कभी-कभी गरीब वरदान तथा अमीरी अभिशाप बन जाती है। यह बात स्मरण रखना चाहिए कि आर्थिक स्थिति तथा समाजीकरण के बीच सम्बन्ध पर कई मध्यवर्ती चरों (intervening variables) का प्रभाव पड़ता है।

Continued.....

Scanned with CamScanner